ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. No.- 179-180

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

1857 की क्रांति में बहेडी तहसील का योंगदान

वंदना गुप्ता

शोध अध्येत्री– प्राचीन इतिहास एवं संस्कृति विभाग, मा.ज्यो.फु.रुहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली (उ0प्र0) भारत

Received-04.02.2023, Revised-10.02.2023, Accepted-15.02.2023 E-mail: vguptavandana11@gmail.com

सारांशः ***रुहेलखंड भू–भाग, उत्तर में गंगा नदी के पूर्व में 28वीं व 30वीं देशांतर रेखाओं के मध्य उत्तर में कुमाऊं पर्वत श्रृंखलाओं, दक्षिण में अवध की सीमा तथा पूर्व में पीलीभीत के क्षेत्र तक विस्तृत था। इस भूभाग के निर्माण में गंगा नदी के अतिरिक्त रामगंगा, देवहा, शारदा तथा अन्य नदियों ने सहयोग दिया है। वृहद होने के कारण इस राज्य का विभाजन उत्तरी तथा दक्षिणी पांचाल में हो गया। गुप्तकाल में 'अच्युत' नामक राजा उत्तरी पांचाल का शासक था। हवेनसांग ने इस क्षेत्र में शिलादित्य नामक बौ शासक का उल्लेख किया है। 700 ई के लगभग तोमर वंशीय राजपूत इस क्षेत्र पर शक्तिशाली हो गए थे। 1004 ई– के आसपास कन्नौज के सूर्यवंशी राजपूतों की कटेहरिया नामक प्रजाति इस क्षेत्र में आकर बस गई।***

कुंजीभूत शब्द– जमींदार, सत्ता स्थापित, आधुनिक रूप, परगनों, तहसीलों, हस्तांतरण, अधीन, विभाजीत, पराजय, गुलाम।

सल्तनत तथा मुगलों ने कटिहार पर अधिकार कर लिया। बरेली नगर की स्थापना हुमायूँ के समय में जमींदार जगत सिंह के पुत्रों वासुदेव एवं बरलदेव के द्वारा 1537 में हुई थी। रुहेलों की सत्ता स्थापित हुई तो इन्होंने बरेली को आधुनिक रूप दिया। रुहेला मूलतः अफगानिस्तान की एक प्रजाति है। 1737 में रुहेलों ने बहेड़ी तथा बरेली के समीप के सभी प्रमुख परगनों तथा तहसीलों पर अधिकार कर लिया। 1773 में रुहेलखंड पर अवध के नवाब का अधिकार हो गया। नवाब की व्यवस्था के विरुद्ध यत्र तत्र विद्रोह हुए। अन्ततः अंग्रेजों के बकाया धन के बदले में नवाब ने रूहेलखंड को अंग्रेजों को 1802 में हस्तांतरण कर दिया। 1802 से 1887 तक रुहेलखंड कंपनी के अधीन रहा।

इस शोध पत्र के माध्यम से 1857 की क्रांन्ति में बहेड़ी तहसील के महत्व को स्थापित करना है। वर्तमान तक 'बहेड़ी क्षेत्र' के योगदान' को बरेली के संदर्भ में दिखाया गया जबकि बहेड़ी का अपना ही महत्व है।

बहेड़ी क्षेत्र में 1857 की क्रान्ति में कई महत्वपूर्ण घटनांए घटी तथा बरेली के नवाब खान बहादुर खान के नेतृत्व में नैनीताल, हल्द्वानी, बहेड़ी, रिछा क्षेत्र तक ही अग्रेंजों को रोक के रखा गया। बहेड़ी की अवस्थिति 28°'46'छ तथा 70°'30'[1] है। बहेड़ी तहसील, नैनीताल मुख्य रोड पर है। अकबर के समय बरेली क्षेत्र, दिल्ली सूवा के अन्तर्गत आता था, जो 'सम्भल' तथा 'बदायूँ' सरकार (जिला) में विभाजित किया गया था।[2] बरेली, बदायूँ सरकार के अधीन था। बहेड़ी[3] तहसील, बरेली जिले के अन्तर्गत आती है जिसमें चौमहला, काबर, रिछा, सरसावां के परगना शामिल था।

रुहेलों के वयोवृद्ध नेता नवाब खान बहादुर खाँ[4] बरेली में 1857 की क्रान्ति के कर्णाधार थे। यह बरेली के भौड़ मुहल्ले के थे। 31 मई 1857 में क्रांन्ति का श्री गणेश हुआ। अंग्रेजों को बरेली छोड़कर भागना पड़ा, क्योंकि सूबेदार बख्त खान ने कप्तान ब्राउन का घर जला दिया, विद्रोह भड़क उठा।, छोटी–छोटी टुकड़ियां बनाकर अंग्रजों को घेर लिया गया। अंग्रेजों को बरेली से दूर रखने के लिए नैनीताल क्षेत्र से अंग्रेजों को भगाने पर विचार किया गया। बरेली तथा नैनीताल के बीच 'बहेड़ी' क्षेत्र में कई छोटी–छोटी टुकडियों ने घेरा डाल लिया तथा अंग्रेजों को आगे नहीं बड़ने दिया इसमें बन्ने मीर[5] अली खाँ मेवाती[6], हाफिज कल्लन, गुलाम हैदर, फजल हक[7], मुहम्मद अली, गौस मुहम्मद, निजाम अली, काले खाँ[8] का प्रमुख योगदान है। मोहनपुर, देवरनियाँ, रिछा, कनमन, कड्डराह नामक गावों में कैम्प बनाकर अंग्रेजों की गतिविधियों पर नजर रखी।

बन्ने मीर, जो खान बहादुर खाँ के पौत्र थे उन्हें अंग्रेजों को नैनीताल में ही रोके रखने के लिए भेजा गया। एक टुकड़ी के साथ बन्ने मीर बहेड़ी पहुँचे। वहीं दूसरी तरफ गुलाम हैदर खाँ[9] के नेतृत्व में दूसरी टुकड़ी भी बहेड़ी पहुँची, जहाँ फजलहक से हैदर खाँ की मुलाकात हुई।नैनीताल पर तीसरा आक्रमण बहेड़ी में रहकर मुहम्मद अली के नेतृत्व में शुरू हुआ जिसमें मुहम्मद अली वीरगति को प्राप्त हुए बन्ने मीर, जो खान बहादुर खाँ के पौत्र थे उन्हें अंग्रेजों को नैनीताल में ही रोके रखने के लिए भेजा गया। एक टुकड़ी के साथ बन्ने मीर बहेड़ी पहुँचे। वहीं दूसरी तरफ गुलाम हैदर खाँ के नेतृत्व में दूसरी टुकड़ी भी बहेड़ी पहुँची, जहाँ फजलहक से हैदर खाँ की मुलाकात हुई। नैनीताल पर तीसरा आक्रमण बहेड़ी में रहकर मुहम्मद अली के नेतृत्व में शुरू हुआ जिसमें मुहम्मद अली वीरगति को प्राप्त हुए।

इस पराजय से खान बहादुर बहुत क्रोधित हुए तथा भागे हुए, सैनिकों को उन्होंने फटकारा उसके बाद उन्होंने नैनीताल पर आक्रमण करने का विचार छोड़ दिया। अब नैनीताल की ओर से बरेली पर अंग्रेजों को आक्रमण रोकने का प्रयत्न करने लगे। इसी समय उन्होंने गौस मोहम्मद को कुछ आदमियों तथा तोपों के साथ महमूद अली खान की सहायता के लिए बहेड़ी भेजा। गौस मोहम्मद तथा महमूद अली खान अपनी सेना के साथ मई 1858 ईस्वी तक बहेड़ी में रहे। मई 1858 ईस्वी में जब रुहेलखंड अंग्रेजों के पूर्ण अधिकार में आ गया, तो गौस मोहम्मद आदि बहेड़ी से अवध की ओर चले गए। खान बहादुर

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

खान ने जब गौस मोहम्मद को बहेरी भेजा था। उसी समय उन्होंने सुना कि अल्मोड़ा की ओर से अंग्रेज आक्रमण करने वाले हैं। अतः उन्होंने फजल हक को कुछ तोपों, पदातियों तथा अश्वों के साथ भेजा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. District Gazetters, Bareilly, Vol.XIII, 1911, P.197.
2. Freedom Straggle in Utter PradeshP Vol-V (1960) by Rizvi. S.A.A.
3. District Gazetteers, Bareilly, 1968.
4. Freedom Struggle in Utter Pradesh Vol-I, 1957.
5. संघर्षकालीन नेताओं की जीवनियाँ द्वारा डॉ0 मोतीलाल भार्गव।
6. भारतीय क्रान्तिकारी आंदोलन का इतिहास द्वारा मनमथ नाथ गुप्त।
7. पीलीभीत जिला गजेटियर वाल्यूम 18, H.R नेविल।
8. My Indian Mutiny Diary Vol-I,W.H. Russel.
9. वही।

*****